Topic 60 अजन्त नपुंसक लिंग सर्वनाम एवं आकारान्त शब्द

अद्ड् डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः।

एभ्यः क्लीबेभ्यः स्वमोरद्ड् आदेशः स्यात्।

डतरप्रत्ययान्त, डतमप्रत्ययान्त, अन्य, अन्यतर और इतर - इन पाँच नपुंसकलिङ्गी शब्दों से परे होने पर 'सु' और 'अम्' के स्थान पर अद्ड् आदेश हो। अनेकाल् होने से 'अनेकाल् शित्सर्वस्य' परिभाषा द्वारा 'अद्ड्' आदेश सम्पूर्ण स्थानी के स्थान पर होगा। 'कतर+सु' में 'कतर' शब्द डतरप्रत्ययान्त है, अतः इससे पर 'सु' को अद्ड् आदेश हो गया। डकार की इत्संज्ञा होने के कारण केवल 'अद्' ही शेष रह जाता है। अतः रूप बनेगा - 'कतर अद्'।

टेः।

डिति भस्य टेर्लोपः। कतरत्, कतरद्। कतराणि। हे कतरत्। शेषं पुंवत्। एवं कतमत्, इतरत्, अन्यत्, अन्यतरत्। अन्यतमस्य तु अन्यतममित्येव।

वा० - एकतरात् प्रतिषेधो वक्तव्यः। एकतरम्।

डित् परे होने पर भसंज्ञक अङ्ग की 'टि' का लोप होता है। अचों में जो अन्त्य अच् है, वह जिसके आदि में हो, उस शब्द समुदाय की 'टि' संज्ञा होती है - अचोऽन्त्यादि 'टि' उदाहरण के लिए 'कतर अद्' में भसंज्ञक अङ्ग 'कतर' की 'टि' - रेफोत्तरवर्ती अकार - का डित् 'अद्' परे होने पर लोप होकर कतर् अद् रूप बनेगा। इस अवस्था में 'वाऽवसाने' से अवसान में स्थित दकार को विकल्प से चर् - तकार होकर 'कतरत्' रूप सिद्ध होगा। अभावपक्ष में 'कतरद्' रूप ही रहेगा।

ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य।

अजन्तस्येत्येव। श्रीपम् ज्ञानवत्। हे 2। ग्रीणि 2।

P.T.O

स्वमोर्नपुंसकात् ।

लुक् स्यात् । वारि ।